International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 88-89

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 88-89
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-11-2019
Accepted: 26-12-2019

डॉ0 ईन्दर देव
शिक्षा विभाग हि.प्र. VPO झड़ग तै0 जुब्बल जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 ईन्दर देव
शिक्षा विभाग हि.प्र. VPOझड़ग तै0 जुब्बल जिला शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत।

आज के सन्दर्भ में नीतिशतक का महत्त्व

डॉ0 ईन्दर देव

साहित्य पर विचार करते समय आदिकाल से ही प्रायः सभी युगों और राष्ट्रों में यह विश्वास प्रचलित रहा है कि काव्य का मूल प्रयोजन नैतिक परितोश एवं शिक्षा है। संस्कृत आलोचना के महासमर्थ स्तम्भ आचार्य मम्मट ने इसे व्यवहारविदे और शिवेतरक्षतये' (काव्य प्रयोजनों) के रूप में समाविष्ट किया है।[1]
संस्कृत वाङ्मय में गीतिकाव्य का महत्वपूर्ण स्थान है। कवि अपनी रागात्मक अनुभूति तथा कल्पना से वर्ण्यविशय तथा वस्तु को भावात्मक बना देता है। यों तो संस्कृत के आलंकारिकों की दृष्टि में काव्यमात्र के लिए भावात्मकता या रसात्मकता अपेक्षित गुण हैं; परन्तु गीतिकाव्य के लिए तो यह अनिवार्य है। इस दृष्टि से भर्तृहरि के शतकत्रय संस्कृत साहित्य में उत्तम स्थान रखते हैं। केवल भारतीय समीक्षकों ने ही नहीं, प्रत्युत पाश्चात्य मनीषियों ने भी काव्य में नीतिवाद को स्वीकार किया है। प्लेटों ने ऐसे काव्यकार का अभिनन्दन किया है जो अपनी कविता के द्वारा मानव का नैतिक एवं चारित्रिक विकास कर सके। हम सब पूर्ण परिचित हैं कि संस्कृत साहित्य में उपदेश की प्रवृत्ति स्थान–स्थान पर रही है। नीतिशतक में जहां एक ओर मनुस्मृति जैसी शिक्षा, महाभारत जैसे उपदेश, पुराणों जैसा रसास्वादन और दर्शनशास्त्र जैसी तर्कशीलता मिलती है, वहीं दूसरी ओर कालिदास जैसी उपमा, दण्डी जैसा पदलालित्य और भारवि जैसा अर्थगाम्भीर्य भी प्राप्त होता है। नीतिशतक मानव मात्र के लिए अत्युत्तम औषधि है जिसका पान करते समय भी मधुरिमा का आभास होता है, पान करने के बाद भी मधुरिमा का आभास होता रहता है और उसका फल भी मधुरिमा से ओत–प्रोत है। इस छोटे से ग्रन्थ में कवि ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है वे संसार के किसी भी व्यक्ति के लिए भूषणस्वरूप है। यही कारण है कि नीतिशतक के पद्य संस्कृतज्ञों के ही नहीं; परन्तु साधारण व्यक्तियों के भी कण्ठाभरण बने हुए हैं। नीतिशतक के पद्य क्या गृहस्थी, क्या वानप्रस्थी, क्या ब्रह्मचारी, क्या संन्यासी, क्या जैन, क्या बौद्ध, क्या सनातनी, क्या आर्य समाजी, सभी के लिए ग्राह्य हैं। इस शतक का एक–एक पद्य मानव को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने वाला है तथा सभी में प्रेम भाव उत्पन्न करने वाला एवं मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करने वाला और उसको स्थायी शान्ति के मार्ग पर अग्रसर कराने वाला है।[2]
भर्तृहरि को संसार का बहुत अनुभव था और उस अनुभव के मार्मिक पक्ष के ग्रहण करने में वे सर्वथा समर्थ थे। जो संसार के बीच रहता हुआ अपने अनुभव के बल पर उसके हृदय को समझने तथा कविता में सुचारूता देने में समर्थ होता है वही लोकप्रिय कवि है। इस दृष्टि से भर्तृहरि सचमुच जनता के कवि है, जिनकी सूक्ष्म दृष्टि संसार की छोटी से छोटी वस्तु का निरीक्षण कर उससे उदात्त शिक्षा ग्रहण करने में समर्थ होती है।
संग्रहित रूप में नीतिपरक पद्य यदि कहीं देखने हैं तो वे नीतिशतक में ही हैं। इस ग्रन्थ में कवि ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है वे संसार के किसी भी व्यक्ति के लिए ग्राह्य है। नीतिशतक के अनुसार अभिमान को दूर करना व्यक्ति का सर्वप्रथम लक्ष्य होना चाहिए और अभिमान को एकमात्र पण्डितों के सत्संग से दूर किया जा सकता है। संसार में अल्पज्ञता ही अहंकार का कारण है। अल्पज्ञता का नाश सर्वज्ञ के सम्पर्क से शीघ्र हो सकता है जिससे मनुष्य सुख और शान्ति का अनुभव कर सकता है। कवि इन सभी भावों को चार पंक्तियों में जिस ढंग से रखता है विश्व का साहित्य भी इसकी इस गम्भीरता की तुलना में नहीं आ सकता है–

'यदा किचिंज्ज्ञोऽहंद्विपइव मदान्धः समभवं
तदासर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किचिंत्किचिंद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।'[3]

नीतिशतक में मूर्ख की निन्दा की गई है। कवि के अनुसार उसकी हठधर्मता केवल उसके लिए ही विनाश का कारण नहीं होती; अपितु वह विश्व के लिए भी एक पहेली बन जाती है।

शक्यो वारयितुं जलेन हतभुक् छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेशजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विशं
सर्वस्यौशधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौशधम्।।[4]
दुर्जन की तुलना कवि सर्प से करता है।
दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः।।[5]
कविसन्तों की अनेक प्रकार से प्रशंसा करता है।
पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम्।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहितेशु कृताभियोगाः।।[6]

भर्तृहरि कहते हैं कि संसार में जो कुछ हो रहा है यह सब कर्म के बल से ही हो रहा है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को विचारपूर्वक कार्य करना चाहिए–

''कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।
तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता।।''[7]

कर्म केवल मनुष्य लोक तक ही सीमित नहीं हैं कर्म का राज्य स्वर्ग लोक तक है। कर्म की सत्ता कवि के मत से इहलौकिक न होकर सर्वत्र विस्तृत है। जो संसार को उत्पन्न करते हैं, पालते हैं और विनाश करते हैं वे देवता भी कर्म के अधीन हैं। अतः कर्म ही प्रधान है। कवि की दृष्टि से यह संसार कर्मभूमि है इसमें आकर मनुष्य को अच्छे कर्म करने चाहिए। तप करना चाहिए। तप से तात्पर्य कवि का निष्काम कर्म तथा कर्तव्य कर्म से है। इस विचारधारा को सम्मुख रखने से स्वतः सिद्ध है कि कवि कर्मवादी हैं।

महाकवि भर्तृहरि ने नीतिशतक में अपने अनुभवों को काव्य रूप में रूपायित कर हमें सचेत करने का प्रयत्न किया है। यहां कवि का क्षेत्र केवल साधारण समाज ही नहीं है; अपितु वह राजा से लेकर प्रजा तक के हित की बात करते है। नीति के ये तत्त्व उन्हें जीवन पथ पर सुगमता से चलने में सहायता देते है। नीति की यह रसप्लावित और हितगर्भा वाणी हमें वे आखें प्रदान करती हैं जिनसे कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का सुसम्यक् विमर्श हो जाता है। विपत्ति पड़ने पर क्या करना चाहिए और सम्पत्ति प्राप्त होने पर कैसा व्यवहार अपेक्षित है, उत्तम, मध्यम और अधम जनों के प्रति कब और कैसा व्यवहार करना चाहिए इत्यादि के विषय में कवि इन मुक्तकों में पिरोए पीढ़ियों के अनुभवों से हमें अवगत कराते है।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि आज मनुष्य में नैतिकता का अभाव हो रहा है। इस दृष्टि से भी नीतिशतक की उपादेयता स्वयंसिद्ध है। नीतिशतक के पद्यों में अनेक नैतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है। ये सिद्धान्त बिना किसी भेद भाव के समग्र विश्व के लिए कल्याणकारी हैं।

संदर्भ

1. काव्यप्रकाश, 1.2
2. सुभाषितत्रिशती,पृ0, 8
3. नीतिशतक, 8
4. वहीं, 11
5. वहीं, 53ः
6. वहीं, 74
7. वहीं, 90